म्हारा मन में बस गयो श्याम रुणिजा नगरी को

म्हारा मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को,
रुणिजा नगरी को,
रुणिजा नगरी को,
म्हारे मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को।bd।

घणा दिना की मन में म्हारे,
पैदल-पैदल आऊ थारे,
मन अबक बुलायो श्याम,
रुणिजा नगरी को,
म्हारे मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को।bd।

झांकी माही डीजे बाजे,
बना नचाया मनडो नाचे,
मन घणो नचायो श्याम,
रुणिजा नगरी को,
म्हारे मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को।bd।

गेला में भण्डारा लागे,
मनवारा करता नहीं थाके,
मन घणो जिमायो श्याम,
रुणिजा नगरी को,
म्हारे मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को।bd।

सांचा मन से जो कोई जावे,
बाबो पल में आस पुरावे,
वाने दरस दिखावें श्याम,
रुणिजा नगरी को,
म्हारे मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को।bd।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

दरसण कर मनडो सुख पावे,
रमेश प्रजापत मन की गावे,
म्हारा घट में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को,
म्हारे मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को।bd।

म्हारा मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को,
रुणिजा नगरी को,
रुणिजा नगरी को,
म्हारे मन में बस गयो श्याम,
रुणिजा नगरी को।bd।

– गायक एवं प्रेषक –
रमेश प्रजापत टोंक

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com